NEP and Learning Outcome-based Curriculum Framework (LOCF)

For

M.A, Sanskrit

Pool Course

(To be effective from the Academic Session 2026)

Department of Sanskrit Gurugram University, Gurugram

(A State Govt. University Established Under Haryana Act 17 Of 2017)

M.A. Sanskrit
(Pool Course)
1- 34

1

Semester -I

MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-01	ज्योतिष शास्त्र-1	251/HS/MD 101	2	0	1	2	0	1	3	15	35	5	20	75

पाठ्यक्रम का विवरण-

ज्योतिष शास्त्र भारत की प्राचीनतम विद्याओं में से एक है। यह वेदों का नेत्र कहा गया है, जो मानव जीवन के भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान प्रदान करता है। यह न केवल ग्रहों और नक्षत्रों की गति को समझाने वाला विज्ञान है, बल्कि यह व्यक्ति के जीवन में आने वाली घटनाओं का भी पूर्वानुमान देता है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करना केवल एक विद्या अर्जन करना नहीं है, बल्कि यह जीवन को गहराई से समझने का माध्यम है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य-

- छात्रों को भारतीय ज्योतिष के मूलभूल सिद्धान्तों से परिचिति करवाना, जिससे वे ज्योतिषीय गणनाओं और कुण्डली निर्माण की प्रारम्भिक समझ प्राप्त कर सके।
- शुभ-अशुभ समय का निर्धारण:-मंगल कार्यों जैसे विवाह, गृह प्रवेश, मुहूर्त, यात्रा आदि के लिए शुभ समय का चयन ज्योतिष के द्वारा किया जाता है, जिससे कार्यों की सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

इकाई 1

- भारतीय ज्योतिष का परिचय : अर्थ, परिभाषा, इतिहास, महत्व और विभिन्न शाखाओं का अध्ययन।
- ज्योतिष के प्रकारः सिद्धान्त, प्रश्न, होरा, मुहूर्त आदि।

इकाई-2

- **खगोलशास्त्र की मूल बातें:** ग्रह, नक्षत्र, राशियाँ, सौरमण्डल का परिचय, मास, ऋतु, अयनांश, उत्तरायण-दक्षिणायण
- **पञ्चाङ्ग तत्व :** तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण

इकाई-3

- **मुहूर्त विज्ञान-** शुभ कार्यों के लिए मुहूर्त चयन, विवाह, वाहन, व्यापार, गृह प्रवेश, नामकरणादि
- **ज्योतिषीय गणना के साधन-** साफ्टवेयर, मोबाइल ऐप्स का प्रयोग
- **भावों का परिचय -** भावों का सामान्य ज्ञान, कुण्डली निर्माण।

मूल ग्रन्थः-

1. ज्योतिष प्रवेशिका, डॉ. रामाश्रय शर्मा , चौखम्भा / संस्कृत भारती
2. ज्योतिष रत्नमाला, पं. रामयश त्रिपाठी, सरस्वती पब्लिकेशन
3. Basics of Vedic Astrology, डॉ. सूर्यनारायण राव, Motilal Banarsidass
4. How to Judge a Horoscope (Vol 1 & 2) डॉ. बी.वी. रमन, UBS Publishers / BVR Foundation
5. Learn Hindu Astrology Easily, K.N Rao, Vision Publications

सीखने के परिणाम-

- दूसरों का मार्गदर्शन करने की योग्यता:
- करियर और आजीविका के अवसर:
- शुभ समय का निर्धारण (मुहूर्त ज्ञान)

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 4 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 14 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 3 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 7 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल चार प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	14 अंक
द्‌वितीय प्रश्न	7 अंक
तृतीय प्रश्न	7 अंक
चतुर्थ प्रश्न	7 अंक

AEC

Semester-I

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC	**व्यावहारिक संस्कृत-1**	251/SKT/AE101	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरणः-

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह न केवल धार्मिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि वैज्ञानिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक ज्ञान का भी महत्वपूर्ण माध्यम रही है। आधुनिक युग में जहाँ संस्कृत को प्रायः एक 'पूजनीय भाषा' के रूप में देखा जाता है, वहीं व्यवहारी संस्कृत का भी विशेष महत्व है। यह वह संस्कृत है जो दैनिक जीवन में व्यवहार हेतु प्रयुक्त की जा सकती है। इस पाठ्यक्रम में रचनानुवाद कौमुदी के अत्यधिक विषय समाहित हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- संस्कृत भाषा में धाराप्रवाहता प्राप्त कराना
- दैनिक जीवन में संस्कृत का प्रयोग सिखाना
- संस्कृत संवाद कौशल का विकास कराना
- भाषिक आत्मविश्वास उत्पन्न करना
- शुद्ध उच्चारण और वैयाकरणिक प्रयोग का अभ्यास कराना
- संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना

इकाई-1

- संस्कृत सम्भाषण- प्रारम्भिक सम्वाद आदि
- विभक्ति ज्ञान- कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान,सम्बन्ध, अधिकरण एवं सम्बोधन
- शब्दरुप- राम, हरि, भानु, पिता, लता, मति, फल,
- धातुरुप (पाँचों लकार) लट्, लङ्, लृट्, लोट्, विधिलिङ्

इकाई-2

- प्रत्यय, उपसर्ग एवं अव्यय(वाक्यों में प्रयोग)
- साधारण संस्कृत अनुवाद- संस्कृत से हिन्दी एवं हिन्दी से संस्कृत

मुख्य ग्रन्थ-

1. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत वार्तालाप (Sanskrit Vartalap) - प्रो. श्यामसुंदर मिश्र
3. संस्कृत भाषा सीखें (Learn Sanskrit Language) - स्वामी श्रीचरण
4. संस्कृत व्यवहारकौशल (Sanskrit Vyavaharakoushal) - डॉ. गिरीश पाण्डेय
5. संस्कृत संवाद प्रबोधिनी (Sanskrit Samvad Prabodhini) - डॉ. विनोद कुमार
6. संस्कृत व्यावहारिक शिक्षा (Sanskrit Practical Education) - प्रो. रवि शंकर शर्मा
7. संस्कृत संवाद साधना (Sanskrit Samvad Sadhana) - स्वामी त्रिपुरसुंदरी
8. व्यवहारिक संस्कृत (Practical Sanskrit) - डॉ. रामकृष्ण शर्मा

सीखने के परिणाम-

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी:

- सरल संस्कृत वाक्यों का निर्माण एवं प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त सामान्य शब्दों, अभिव्यक्तियों एवं क्रियाओं को संस्कृत में व्यक्त कर सकेंगे।
- मूलभूत संस्कृत व्याकरणिक तत्वों (संधि, समास, कारक, लकार, वचन, लिंग आदि) को समझ सकेंगे।
- संस्कृत संवाद, परिचय, अभिवादन आदि के माध्यम से संवाद-क्षमता (communication skill) विकसित कर सकेंगे।
- पाठ्यांशों एवं श्लोकों का सरल संस्कृत में अनुवाद तथा व्याख्या करने में समर्थ होंगे।
- संस्कृत के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं प्रयोगशीलता विकसित कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो

सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक

VAC

Semester-I

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-01	संस्कृत साहित्य में संस्कृति और सभ्यता की रूपरेखा	251/SKT/ VA101	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य में निहित भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की व्यापक और गहन समझ प्रदान करने के उद्देश्य से निर्मित है। इसमें वैदिक, उपनिषदिक, महाकाव्य तथा शास्त्रीय साहित्य के माध्यम से भारतीय जीवन-मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक संरचना का अध्ययन किया जाएगा।

पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृति और सभ्यता की मूल अवधारणाओं का विश्लेषण करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों की भूमिका को समझाया जाएगा। वेदों और उपनिषदों में वर्णित आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण, रामायण और महाभारत में प्रतिपादित आदर्श जीवन-मूल्य, तथा नीतिग्रंथों में वर्णित नैतिक शिक्षाओं का अध्ययन विशेष रूप से किया जाएगा।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

- संस्कृत साहित्य में निहित भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के मूल तत्वों का परिचय देना।
- वेद, उपनिषद, महाकाव्य, नीतिग्रंथ आदि में वर्णित सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन।
- भारतीय जीवन-पद्धति, धर्म, आचार, एवं सामाजिक संरचना की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम

इकाई 1: संस्कृति और सभ्यता की संकल्पना

- संस्कृति एवं सभ्यता: परिभाषा, स्वरूप एवं भेद
- भारतीय संस्कृति के मूल तत्व (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)
- संस्कृत साहित्य का सांस्कृतिक महत्व

इकाई 2: वैदिक, उपनिषदिक एवं महाकाव्य कालीन संस्कृति

- वेदों में सामाजिक एवं धार्मिक जीवन (यज्ञ, संस्कार, ऋषि-परंपरा)
- उपनिषदों में दार्शनिक चिंतन एवं जीवन-दृष्टि
- आश्रम व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था
- रामायण एवं महाभारत में आदर्श जीवन-मूल्य

अनुशंसित पठन सामग्री

मूलग्रन्थ :

1. उपाध्याय, बलदेव, वैदिकसाहित्य और संस्कृति, शारदा मंदिर, वाराणसी।
2. भारतस्य सांस्कृतिक निधिः, राम जी उपाध्याय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
3. भारतीय संस्कृति का उत्थान, रामजी उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, दिल्ली
4. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी. काणे, उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान,, लखनऊ
5. प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, डी.डी. कौशाम्बी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. भारतीय संस्कृति : कुछ विचार, सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
7. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति हुसैन एस. आविर, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
8. गोयल, प्रीतिप्रभा, भारतीय संस्कृति, राजस्थानी ग्रन्थागार, जयपुर।

सहायक ग्रन्थ:

1. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति हुसैन एस. आविर, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
2. टण्डन, किरण, भारतीय संस्कृति, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
3. भण्डारकर, आर.जी. वैष्णव, शैव और अन्य धार्मिक मत, अनुवाद माहेश्वरीप्रसाद, भारतीयविद्याप्रकाशन, दिल्ली

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- संस्कृत साहित्य में संस्कृति एवं सभ्यता की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय जीवन-मूल्यों एवं परंपराओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विभिन्न ग्रंथों में वर्णित सांस्कृतिक आयामों की पहचान कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक

Semester – II

MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-2	Introduction to Natyashastra	241/HS/ MD202	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

Course Description:

This course introduces the foundational principles of Indian dramaturgy as codified in *Bharata's Nāṭyaśāstra*, the earliest and most comprehensive treatise on dramaturgy and performance arts in the Indian tradition. The course explores the text's historical context, structural composition, aesthetic theories, and its influence on Indian classical dance, drama, and music traditions. It emphasizes the theoretical and practical dimensions of Nāṭya, Rasa, Bhāva, Abhinaya, and stagecraft.

Course Objectives:

- To introduce the historical and cultural background of the Nāṭyaśāstra.
- To familiarize students with the key concepts such as Nāṭya, Rasa, Bhāva, and Abhinaya.
- To understand the structure of dramatic performance and its ritualistic and didactic purpose.
- To explore the impact of Nāṭyaśāstra on classical Indian dance and theatre traditions.
- To equip students with basic interpretive and performance skills rooted in Nāṭyaśāstra.

Unit 1: Introduction to the Nāṭyaśāstra

- Origin and authorship: Bharata and the mythology of Nāṭya's creation.
- Structure and content overview (36 chapters).
- Nāṭya as the fifth Veda.
- Historical context and influence.

Unit 2: Theory of Rasa and Bhāva (Chapters 6 & 7)

- Definition and types of Rasa (Śṛṅgāra, Hāsya, Karuṇa, Raudra, Vīra, Bhayānaka, Bībhatsa, Adbhuta).
- Corresponding Sthāyi-bhāvas.
- Vibhāva, Anubhāva, Vyabhicāribhāva.
- The process of Rasa-realization (*Rasa-niṣpatti*)..

Unit 3: Abhinaya and Performance Techniques (Chapter 8 onwards)

- Four types of Abhinaya: Āṅgika, Vācika, Āhārya, Sāttvika.
- Gestures (Mudrās), body movements, facial expressions.
- Role of music and instruments.
- Stage design and actor training.

Unit 4: Practical Component (where applicable)

- Demonstration of Bhāva and Rasa through simple enactments.
- Mudrā and movement practice.
- Script reading from classical dramas (e.g., *Abhijñānaśākuntalam*, *Mṛcchakaṭika*).

Suggested Readings:

1. Bharata – *Nāṭyaśāstra* (with English or Hindi translation).
2. A. B. Ghosh – *A Study on Nāṭyaśāstra*.
3. Kapila Vatsyayan – *Bharata: The Nāṭyaśāstra*.
4. Manomohan Ghosh (tr.) – *Nāṭyaśāstra (2 vols.)*.
5. S. N. Dasgupta – *Fundamentals of Indian Aesthetics*.
6. Padma Subrahmanyam – *Bharata's Art: Then and Now*.

Course Outcomes:

Upon successful completion of this course, students will be able to:

- Demonstrate a foundational understanding of the *Nāṭyaśāstra* as a classical Indian treatise on dramaturgy and performing arts.
- Identify and explain key concepts such as Nāṭya, Rasa, Bhāva, and Abhinaya and their theoretical interrelationships.
- Analyze the structure of classical Indian drama, including plot construction, character types, and dramatic conventions.

- Apply the principles of Abhinaya in basic performance settings and understand the significance of body language and gesture in Indian aesthetics.
- Evaluate the influence of the *Nāṭyaśāstra* on Indian classical dance forms, music, and theatrical traditions.
- Integrate theoretical knowledge with practical appreciation of Indian performing arts, enhancing cultural and aesthetic sensitivity.

Instructions for External Examiner: There will be a total of 4 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 14 marks, and will be based on the entire syllabus. This question may be objective or subjective in nature. The remaining 3 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 12 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of four questions.

TOTAL MARKS: 50 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	14 Marks
Question Number 2	12 Marks
Question Number 3	12 Marks
Question Number 4	12 Marks

AEC

Semester-II

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-02	**व्यावहारिक संस्कृत-2**	251/SKT/AE201	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरणः-

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह न केवल धार्मिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि वैज्ञानिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक ज्ञान का भी महत्वपूर्ण माध्यम रही है। आधुनिक युग में जहाँ संस्कृत को प्रायः एक 'पूजनीय भाषा' के रूप में देखा जाता है, वहीं व्यवहारी संस्कृत का भी विशेष महत्व है। यह वह संस्कृत है जो दैनिक जीवन में व्यवहार हेतु प्रयुक्त की जा सकती है। इस पाठ्यक्रम में रचनानुवाद कौमुदी के अत्यधिक विषय समाहित हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- संस्कृत भाषा में धाराप्रवाहता प्राप्त कराना
- दैनिक जीवन में संस्कृत का प्रयोग सिखाना
- संस्कृत संवाद कौशल का विकास कराना
- भाषिक आत्मविश्वास उत्पन्न करना
- शुद्ध उच्चारण और वैयाकरणिक प्रयोग का अभ्यास कराना
- संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना
- लोकवाणी और काव्यवाणी के बीच सेतु निर्माण कराना
- संस्कृत को जीवंत भाषा बनाना

इकाई1

बोलचाल की संस्कृत

दैनिक जीवन में प्रयुक्त संस्कृत वाक्य

I. परिचय, विनय, प्रश्न, उत्तर, आदेश आदि वाक्य शैली

II. व्यावसायिक, शैक्षिक, पारिवारिक और सामाजिक संवाद

- उदाहरण- भवतः नाम किम्?
- भवान् कुत्र निवसति?
- भवती किं पठति?

इकाई-02

संस्कृत अनुवाद कौशल

- हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद
- संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद
- अंग्रेजी से संस्कृत अनुवाद
- संस्कृत में भाषण की तैयारी
- शुद्ध उच्चारण एवं अनुवादः **नीतिशतकम् के प्रथम १० श्लोक**

मुख्य ग्रन्थ-

1. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत वार्तालाप (Sanskrit Vartalap) - प्रो. श्यामसुंदर मिश्र
3. संस्कृत भाषा सीखें (Learn Sanskrit Language) - स्वामी श्रीचरण
4. संस्कृत व्यवहारकौशल (Sanskrit Vyavaharakoushal) - डॉ. गिरीश पाण्डेय
5. संस्कृत संवाद प्रबोधिनी (Sanskrit Samvad Prabodhini) - डॉ. विनोद कुमार
6. संस्कृत व्यावहारिक शिक्षा (Sanskrit Practical Education) - प्रो. रवि शंकर शर्मा
7. संस्कृत संवाद साधना (Sanskrit Samvad Sadhana) - स्वामी त्रिपुरसुंदरी
8. व्यवहारिक संस्कृत (Practical Sanskrit) - डॉ. रामकृष्ण शर्मा
9. भर्तृहरि। (2018). *नीतिशतकम्* (सम्पा. P. V. Kane). मोतीलाल बनारसीदास.

सीखने के परिणाम-

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थीः

- संस्कृत में संवाद, पत्रलेखन, अनुच्छेद लेखन तथा कथन करने में अधिक दक्ष होंगे।
- विविध लकारों, वाच्यों, कारकों तथा समासों का व्यवहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

- सरल एवं मध्यम स्तर के गद्यांशों का संस्कृत से हिंदी/अंग्रेज़ी और हिंदी/अंग्रेज़ी से संस्कृत में अनुवाद करने में सक्षम होंगे।
- शुद्ध एवं प्रभावशाली संस्कृत वाक्य रचना द्वारा भावाभिव्यक्ति कर सकेंगे।

बाहय परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक

SEC

Semester-II

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-02	संस्कृत पत्रकारिता	251/SKT/SE201	1	0	1	1	0	1	2	5	20	5	20	50

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास, विशेषतः संस्कृत पत्रकारिता के स्वरूप, इतिहास एवं वर्तमान स्थिति को समझाने हेतु है। छात्र इसमें मीडिया नैतिकता, नवीन मीडिया एवं साइबर पत्रकारिता की मूल अवधारणाओं से परिचित होंगे।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास को समझना।

- संस्कृत पत्रकारिता के विकासक्रम का अध्ययन।
- मीडिया नैतिकता एवं आचार संहिता की समझ विकसित करना।
- नवीन मीडिया तथा साइबर पत्रकारिता के स्वरूप से परिचित कराना।

इकाई 1: संस्कृत पत्रकारिता का परिचय

- पत्रकारिता की परिभाषा एवं स्वरूप
- संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास एवं विकास
- प्रमुख संस्कृत पत्र-पत्रिकाएँ (जैसे– *सुधर्मा, संस्कृत प्रतिभा*)
- वर्तमान परिदृश्य एवं चुनौतियाँ
- संस्कृत पत्रकारिता की संभावनाएँ

इकाई 2: समाचार लेखन की मूल तकनीक

- समाचार लेखन की शैली (सरल संस्कृत में)
- शीर्षक लेखन (Headline Writing)

- रिपोर्टिंग के प्रकार
- हिंदी/अंग्रेज़ी से संस्कृत में अनुवाद की विधि
- भाषा शुद्धि एवं संक्षिप्त लेखन
- प्रूफ रीडिंग के आधार

इकाई 3: संस्कृत समाचार एवं संवाद (व्यावहारिक- Practical)

- डिजिटल प्लेटफॉर्म (ब्लॉग, वेबसाइट, सोशल मीडिया)
- संस्कृत में समाचार प्रस्तुति का प्रारंभिक अभ्यास
- आकाशवाणी/दूरदर्शन शैली में संवाद
- संस्कृत में भाषण देना: (1-2 मिनट का लघु भाषण)
- दैनिक समाचारों का संस्कृत अनुवाद (सरल)

अनुशंसित पठन सामग्री

संदर्भ पुस्तकें:

- **मिश्र, रामगोपाल** – संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास (1976), विवेक प्रकाशन, सी-11/17, मॉडल टाउन, दिल्ली-110009।
- **गयावाल, ललाशंकर** – स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत पत्रकारिता (2003), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली। (पृष्ठ 297–327)
- **मिश्र, कृष्ण बिहारी** – हिंदी पत्रकारिता (2006), भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टिट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली।
- **त्रिपाठी, राधावल्लभ** – संस्कृत साहित्य : बीसवीं शताब्दी (1999), राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
- सागरिका (संस्कृत त्रैमासिक पत्रिका) – संस्कृत विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश)।
- सुधर्मा (दैनिक संस्कृत समाचार पत्र)
- संस्कृत प्रतिभा पत्रिका
- आधुनिक मीडिया सामग्री (ऑनलाइन संस्कृत समाचार पोर्टल)

अपेक्षित पाठ्यक्रम परिणाम:

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात छात्र:

- पत्रकारिता के ऐतिहासिक पक्षों को समझ सकेंगे।

- संस्कृत पत्रकारिता की ऐतिहासिक और आधुनिक भूमिका को विश्लेषित कर सकेंगे।
- मीडिया नैतिकता और डिजिटल पत्रकारिता के विषय में सजग होंगे।
- मीडिया में भाषा, समाज और संस्कृति के संबंध को समझ पाएंगे।

बाहय परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 10 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 5 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 20 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	10 अंक
द्वितीय प्रश्न	5 अंक
तृतीय प्रश्न	5 अंक

Semester-III

MDC

Cours e Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-3	Indian Aesthetics	251/HS/MD 301	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

Course Description:

Aesthetics is a potent and important field of literary criticism. It has acquired the status and recognition of an independent academic discipline today, Aesthetics deals with the historically determined essence of human values, their creation, perception, appreciation and assimilation. It is the science and philosophy of all fine art forms. Indian perception accepts poetry, drama, music, architecture, iconography and painting as independent Art forms. The principal objective of this course is to give the students an overview of the major trends of Indian Aesthetics.

Course Objective:

The principal objective of this course is to provide students with a comprehensive understanding of the foundational concepts and philosophical underpinnings of Indian aesthetics. This course aims to:

- Introduce students to the scope and significance of aesthetics as a discipline within literary and artistic traditions.
- Explore the evolution of Indian aesthetic thought from Vedic literature to classical treatises such as *Nāṭyaśāstra*, *Dhvanyāloka*, and *Sāhityadarpaṇa*.
- Examine the principles of Rasa, Dhvani, Alamkāra, Vakrokti, Auchitya, and other key aesthetic doctrines.
- Foster critical appreciation of Indian art forms including poetry, drama, music, architecture, iconography, and painting.
- Enable students to compare Indian aesthetic theories with selected Western aesthetic ideas and schools.

Unit: I Aesthetics (Saundaryaśāstra), its nature and components

- **Beauty (Saundarya)**: its definition, nature, importance, and components—**vaya** (age), **rūpa** (form), **vacana** (speech), and **hāva** (gesture).

- Discussion of synonyms of the term *Beauty (Saundarya)*: **ramaṇīyatā, lāvaṇya, cārutā, kānti, madhuratā, manohāritā, suṣamā, abhirāmatā.**
- Major Ācāryas: **Bharata, Bhāmaha, Vāmana, Ānandavardhana, Rājaśekhara, Abhinavagupta, Mammaṭa,**

Unit: II The process of Aesthetic experience (Rasa)

- **Constituents of Rasa**:
  Bhāva (human feelings and emotions), **Vibhāva** (causes or determinants), **Anubhāva** (voluntary gestures), **Sāttvika Bhāva** (involuntary gestures), **Vyabhicāri Bhāva** (transitory states), **Sthāyibhāva** (basic mental states), **Sahṛdaya/Sāmājika** (connoisseur/spectator).
- **Anukārya, Anukartā, Sādhāraṇīkaraṇa** (generalization).
- **Four mental stages of Rasa realization**:
  Vikāsa (cheerfulness), **Vistāra** (exaltation), **Kṣobha** (agitation), **Vikṣepa** (perturbation).
- **Number of Rasas according to Bharata.**
- **Nature of Rasa (aesthetic experience)** according to *Sāhityadarpaṇa*:
  aesthetic enjoyment as eternal bliss and ultimate reality (**ānandamayatā, alaukikatā**).

Unit: III Prominent thinkers of Indian Aesthetics and Perception of beauty in Abhijñānaśākuntalam

- Perception of beauty in Drama from cultural, social and aesthetical point of view in the context of Abhijñānaśākuntalam.

References: Compulsory Reading:

1. Singh, Satyavrata, Sāhityadarpaṇa of Vishvanatha, Chaukhamba Vidyabhavan, Varanasi, 1957.
2. Kane P.V., History of Sanskrit Poetics pp.352-391, Motilal Banarasidas Publishers Private Limited, Delhi, 2002.
3. Pandey, Dr. Kantichandra: Comparative Aesthetics, vol.1 Chowkhamba Sanskrit series office Varanasi, 1972.

1. चतुर्वेदी ब्रजमोहन, भारतीय सौन्दर्यदर्शन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृ. 5-12 22-34 5.
2. चतुर्वेदी ब्रजमोहन, भारतीय सौन्दर्यदर्शन, पृ. 42-60 6.
3. पाण्डेय कान्तिचन्द्र, स्वतंत्र कलाशास्त्र, प्रथम भाग पृ. 593-625 7.
4. चतुर्वेदी ब्रजमोहन, भारतीय सौन्दर्यदर्शन, पृ. 37-42 8.
5. पाण्डेय, कान्तिचन्द्र, स्वतंत्र कलाशास्त्र, प्रथम भाग पृ. 593-625, चौखम्भा प्रकाशन 1978 9.

6. चतुर्वेदी ब्रजमोहन, भारतीय सौन्दर्यदर्शन, पृ .61-76

Course Learning Outcomes:

This course will enable students to identify the real essence behind all ideas of Beauty as propounded by Indian rhetoricians. After the completion of the course, the learner will be able to understand the Indian deliberations on aesthetic experience in the form of Rasa and its process. The participant will be able to appreciate the various artistic modes of expressions of Beauty in general and poetry in particular. The course will help the student peep into the historical evolution of the Indian science of aesthetics.

Instructions to External Examiner:

There will be a total of 4 questions in this question paper. The first question will be compulsory, carrying 14 marks, and will be based on the entire syllabus. This question may be objective or subjective in nature. The remaining 3 questions will be asked from different units of the syllabus, and each question will carry 12 marks. Internal choices will be available for each question. It will be compulsory for the students to answer a total of four questions.

TOTAL MARKS: 50 (TE)	**TIME: 2hr**
Question Number	**Marks**
Question Number 1(compulsory)	14 Marks
Question Number 2	12 Marks
Question Number 3	12 Marks
Question Number 4	12 Marks

VAC

Semester-III

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-3	**भारतीय कला** (भारतीय ज्ञान परम्परा)	251/SKT/VA301	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम भारतीय कला की विभिन्न विधाओं – जैसे नृत्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, नाट्य और लोककलाओं – का सम्यक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें भारतीय सौंदर्यशास्त्र (*रस, ध्वनि, रूपक, लक्षणा*), शास्त्रीय ग्रंथों (जैसे *नाट्यशास्त्र, संगीतरत्नाकर, शिल्पशास्त्र*) तथा भारतीय जीवनदृष्टि के साथ कलाओं के अंतर्संबंध को प्रमुखता दी जाती है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- भारतीय कला की विविध परंपराओं एवं शैलियों को समझाना।
- भारतीय दर्शन, धर्म एवं समाज में कलाओं की भूमिका स्पष्ट करना।
- सौंदर्यशास्त्र एवं शास्त्रीय ग्रंथों के आलोक में कलाओं का मूल्यांकन।
- कला एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्संबंध को रेखांकित करना।
- समकालीन समाज में भारतीय कला की प्रासंगिकता को जानना।

इकाई 1: भारतीय कला का परिचय

- भारतीय कला की अवधारणा, उद्देश्य और महत्व
- कला, धर्म, संस्कृति और अध्यात्म का संबंध
- लौकिक एवं पारलौकिक कला

इकाई 2: भारतीय कला की प्रमुख विधाएँ

- स्थापत्यकला: मंदिर स्थापत्य की शैलियाँ (नागर, द्रविड, बेसर)
- मूर्तिकला: मथुरा, गांधार, चोल शैली
- चित्रकला: अजंता, मधुबनी, कांगड़ा, तंजावुर
- संगीत: हिन्दुस्तानी व कर्नाटिक परंपरा

- नृत्य: शास्त्रीय (कथक, भरतनाट्यम आदि) एवं लोक नृत्य
- नाट्यकला: संस्कृत नाटक, लोकनाट्य, यक्षगान, तमाशा
- 64 कलाएँ और उनका जीवनोपयोग

अनुशंसित पठन सामग्री

1. शुक्ल, हीरालाल. (2012). भारतीय कला एवं सौंदर्यशास्त्र. वाराणसी: चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन। (भारतीय कला के विभिन्न पक्षों - मूर्ति, चित्र, वास्तु, संगीत व सौंदर्यदृष्टि - का उत्कृष्ट विश्लेषण)
2. मिश्र, राधावल्लभ. (2004). भारतीय शिल्पकला. वाराणसी: चौखम्भा विद्या भवन। (शिल्पशास्त्र और स्थापत्य पर केंद्रित पुस्तक जिसमें वैदिक और पुराणिक दृष्टिकोण भी है)
3. शर्मा, रामस्वरूप. (2001). भारतीय चित्रकला का इतिहास. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन। (प्राचीन से आधुनिक काल तक की चित्रकला शैलियों का सुसंगत विवरण)
4. त्रिपाठी, विद्या निवास. (1998). भारतीय नाट्यशास्त्र. दिल्ली: साहित्य भवन। (नाट्यशास्त्र और अभिनय कला का विस्तृत विवेचन)
5. वत्स्यायन, कपिला. (1995). भारतीय नृत्य शास्त्र. नई दिल्ली: राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय। (भारतीय शास्त्रीय नृत्य पर गहन अध्ययन; नाट्यशास्त्र से आधुनिक परंपराओं तक)
6. उपाध्याय, नरेन्द्र. (2010). भारतीय संगीत का इतिहास. लखनऊ: भारतीय संगीत संस्थान। (भारतीय संगीत के विकास, राग-रागिनियों व गायक शैलियों पर केंद्रित)
7. सिंह, कृष्णदत्त. (1999). भारतीय स्थापत्य कला. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन। (मंदिर स्थापत्य, वास्तुशास्त्र और उसकी परंपरागत भारतीय दृष्टि का परिचय)
8. Bharata. (2000). Nāṭyaśāstra (M. Ghosh, Trans.). Delhi: Chowkhamba.
9. Coomaraswamy, A. K. (1956). The Dance of Śiva: Essays on Indian Art and Culture. New York: Noonday Press.
10. Vatsyayan, K. (1997). Classical Indian Dance in Literature and the Arts. New Delhi: Sangeet Natak Akademi.
11. Shukla, R. (2012). Bharatiya Kala evam Saundaryashastra. Varanasi: Chaukhamba Surbharti.
12. Zimmer, H. (1946). Myths and Symbols in Indian Art and Civilization. Princeton University Press.
13. Pandey, K. C. (1950). Comparative Aesthetics (Vols. 1–2). Varanasi: Chowkhamba.

अपेक्षित पाठ्य परिणाम:

छात्र इस पाठ्यक्रम के अंत में:

- भारतीय कला की शास्त्रीय परंपराओं को पहचान सकेंगे।
- कलाओं में अंतर्निहित धार्मिक, दार्शनिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।

- IKS व NEP 2020 के अनुसार भारतीय कलाओं के शैक्षणिक उपयोग को जान पाएंगे।
- भारतीय कला की वैश्विक प्रासंगिकता को आत्मसात कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक

SEC

Semester-III

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-02	शोध-पत्र लेखन के मूल कौशल	251/SKT/SE301	1	0	2	1	0	1	2	5	20	5	20	50

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध-पत्र लेखन की आधारभूत समझ एवं व्यावहारिक कौशल प्रदान करने के उद्देश्य से निर्मित है। इसमें शोध विषय के चयन से लेकर शोध-पत्र की संरचना, लेखन शैली, संदर्भण, तथा प्रस्तुतीकरण तक की संपूर्ण प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया जाएगा। विशेष रूप से मानविकी एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में शोध के व्यावहारिक पक्षों पर बल दिया जाएगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

शोध पद्धति एवं अकादमिक लेखन के मूल सिद्धांतों से परिचित कराना।

- शोध-पत्र लेखन की मूलभूत अवधारणाओं से परिचित कराना।
- शोध विषय, शोध प्रश्न एवं परिकल्पना निर्माण की क्षमता विकसित करना।
- अकादमिक लेखन शैली एवं तर्क-विन्यास का प्रशिक्षण देना।
- संदर्भण (Citation) एवं प्लेगरिज़्म से बचाव के उपाय सिखाना।
- शोध-पत्र के प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन की प्रक्रिया से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम

इकाई 1: शोध-पत्र लेखन की आधारभूत समझ

- शोध का स्वरूप एवं महत्व (विशेषतः मानविकी में)
- शोध विषय का चयन: प्रासंगिकता, नवीनता, व्यवहार्यता
- शोध प्रश्न, परिकल्पना एवं उद्देश्य निर्धारण
- शोध-पत्र की संरचना: शीर्षक, सारांश (Abstract), भूमिका, साहित्य समीक्षा, मुख्य भाग, निष्कर्ष

- अकादमिक लेखन शैली एवं तर्क-विन्यास

इकाई 2: लेखन तकनीक, संदर्भण एवं प्रस्तुतीकरण

- साहित्य समीक्षा एवं स्रोतों की पहचान (प्राथमिक/द्वितीयक)
- संदर्भ शैली: APA, MLA, Chicago एवं भारतीय पद्धति
- Footnotes, Endnotes एवं Bibliography
- प्लेगरिज़्म: प्रकार, पहचान एवं बचाव
- शोध-पत्र का संपादन एवं भाषा शुद्धि

Suggested Readings / Reference Texts:

1. **Kothari, C.R.** – *Research Methodology: Methods and Techniques*
2. **R.P. Bhatnagar & R. Bhargava** – *Research Methodology in Humanities*
3. **Jayant Parikh** – *Shodh Pravidhi* (for Sanskrit-based research methods)
4. **UGC Guidelines for Plagiarism and Research Ethics**
5. **डॉ. संजय अग्रवाल –"शोध पद्धति: शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र एवं मानविकी के लिए"** प्रकाशक: साहित्य भवन पब्लिकेशन्स
6. **डॉ. जयंत पारीक –"शोध प्रविधि"** प्रकाशक: विद्यार्थी ग्रंथमाला, राजस्थान
7. **डॉ. रमेश चन्द्र –"शोध प्रविधि एवं रिपोर्ट लेखन"** प्रकाशक: अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस
8. **डॉ. अर्चना शर्मा –"मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में शोध पद्धति"** विषयवस्तु: साहित्य, इतिहास, दर्शन, समाजशास्त्र जैसे विषयों में शोध की बुनियादी समझ।

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- एक सुव्यवस्थित शोध-पत्र की रूपरेखा तैयार कर सकेंगे।
- प्रासंगिक स्रोतों का चयन एवं विश्लेषण कर सकेंगे।
- अकादमिक शैली में स्पष्ट एवं तार्किक लेखन कर सकेंगे।
- सही संदर्भण का प्रयोग करते हुए प्लेगरिज़्म से बच सकेंगे।
- आत्मविश्वास के साथ शोध-पत्र प्रस्तुत कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 10 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 5 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 20 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	10 अंक
द्वितीय प्रश्न	5 अंक
तृतीय प्रश्न	5 अंक

Semester-IV
MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-04	**भारतीय अनुष्ठान एवं संस्कार**	251/HS/ MD401	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय जीवन-पद्धति में अनुष्ठानों एवं संस्कारों की भूमिका का शास्त्रीय एवं व्यावहारिक अध्ययन कराता है। इसमें वैदिक एवं स्मार्त परंपरा के प्रमुख संस्कारों, उनके दार्शनिक आधार, सामाजिक महत्त्व तथा समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जाएगा। विद्यार्थियों को ग्रंथाधारित अध्ययन के साथ-साथ संस्कारों की संरचना एवं अनुष्ठान-विधि की समझ विकसित कराई जाएगी।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- भारतीय संस्कार परंपरा की मूल अवधारणा एवं विकास को समझाना।
- प्रमुख संस्कारों के शास्त्रीय आधार एवं विधि का अध्ययन कराना।
- अनुष्ठानों के दार्शनिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को स्पष्ट करना।
- समकालीन समाज में संस्कारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

पाठ्यक्रम

इकाई 1: संस्कार एवं अनुष्ठान की संकल्पना

- संस्कार: परिभाषा, स्वरूप एवं उद्देश्य
- वैदिक एवं स्मार्त परंपरा में संस्कारों का विकास
- षोडश संस्कारों का परिचय एवं वर्गीकरण
- धर्म, कर्म एवं संस्कार का संबंध
- गृह्यसूत्र एवं धर्मशास्त्रों में संस्कार-विधि

इकाई 2: नित्य विधि

- प्रातः, स्नान और भोजन मंत्र
- संध्या विधि और वैदिक संध्या
- व्रत, उपवास, तीर्थ और श्राद्ध
- पंचमहायज्ञ

इकाई 3: अनुष्ठान, दार्शनिक आधार एवं समकालीन प्रासंगिकता

- यज्ञ, होम एवं पूजन की विधि एवं तत्त्व
- मंत्र, संकल्प एवं आहुति का महत्व
- संस्कारों का मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक पक्ष
- भारतीय समाज में संस्कारों की भूमिका
- आधुनिक संदर्भ में संस्कारों का परिवर्तन एवं प्रासंगिकता

अनुशंसित पठन सामग्री

- पारस्करगृहयसूत्र संपा. सुधाकर मालवीय, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
- कर्म कौमुदी, डॉ बृजेश कुमार शुक्ल, नाग प्रकाशक, दिल्ली 2001
- हिंदू संस्कार, राजबली पांडे चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 1995
- वैदिक संस्कार विधि , महर्षि दयानन्द सरस्वती , गोविंदराम हसानन्द प्रकाशन, नई दिल्ली
- पंचमहायज्ञ विधि , महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट , नई दिल्ली
- संस्कार प्रकाश, भवानी शंकर त्रिवेदी, लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली
- नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर
- काणे, पी. वी. (1974). *धर्मशास्त्र का इतिहास* (खंड 1–5). पूना: भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट।
- पाण्डेय, राजबली. (1969). *हिन्दू संस्कार*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
- दयानन्द सरस्वती. (200 संस्कार विधि*. नई दिल्ली: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।
- मनु. (2005). *मनुस्मृति* (चयनित अध्याय). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- आपस्तम्ब. (1998). *आपस्तम्ब गृह्यसूत्र* (चयनित अंश). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- पारस्कर. (1999). *पारस्कर गृह्यसूत्र*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।

* गोंडा, जे. (1980). *वैदिक अनुष्ठान: गैर-औपचारिक विधियाँ.* लीडेन: ब्रिल।

पाठ्यक्रम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

* संस्कारों के शास्त्रीय आधार एवं विधि को समझ सकेंगे।
* विभिन्न संस्कारों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्त्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
* अनुष्ठानों के दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्षों को स्पष्ट कर सकेंगे।
* आधुनिक समाज में संस्कारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

* **परीक्षा समय** - 2 घंटा , **पूर्णांक**- 50

इस प्रश्नपत्र में **कुल 4 प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, **जो 14 अंकों का** होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष 3 प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक **प्रश्न 12 अंकों का होगा।** प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल चार प्रश्नों का उत्तर** देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 50 (TE)	**समय 2 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**12 अंक**
तृतीय प्रश्न	**12 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**12 अंक**

AEC

Semester-IV

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-3	**व्यावहारिक संस्कृत-3**	251/SKT/AE401	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

पाठ्यक्रम विवरण:

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में उन्नत स्तर की संवादात्मक, लेखन, पठन एवं श्रवण क्षमता से समृद्ध करना है। यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग पर केन्द्रित है, जिससे छात्र औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थितियों में संस्कृत का सुगठित उपयोग कर सकें। विद्यार्थियों को संस्कृत में अनुच्छेद लेखन, संवाद प्रस्तुति, भाषण, तथा समाचार पठन का अभ्यास कराया जाएगा। यह स्तर पूर्ववर्ती दो स्तरों पर आधारित है तथा छात्रों को दैनिक जीवन के आधुनिक प्रसंगों में संस्कृत के व्यवहार में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अग्रसर करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- विद्यार्थियों को संस्कृत में संवाद, लेखन एवं श्रवण की उन्नत क्षमता प्रदान करना।
- संस्कृत गद्य-पद्य के माध्यम से संप्रेषण कौशल का विकास करना।
- संस्कृत में अनुवाद, भाषण, वर्णन, अनुच्छेद लेखन आदि के माध्यम से व्यवहारिक दक्षता प्राप्त कराना।
- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के व्यवहारिक प्रयोग में दक्ष बनाना।
- विद्यार्थियों को औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रसंगों में संस्कृत में अभिव्यक्ति हेतु तैयार करना।
- संस्कृत में समाचार, भाषण, संवाद आदि के माध्यम से समसामयिक विषयों पर प्रस्तुति की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं निरंतर व्यवहारशीलता का विकास करना।

इकाई-1: संवाद कौशल (Conversation Skills)

- संस्कृत में दैनिक जीवन के उन्नत संवाद:
  - कार्यालय, पुस्तकालय, बैंक, बाज़ार, अस्पताल, यात्रा आदि
  - प्रश्नोत्तर शैली, आदान-प्रदान के वाक्य
  - औपचारिक एवं अनौपचारिक शैली में वार्तालाप

- ○ श्रव्य सामग्री पर आधारित अभ्यास (संस्कृत ऑडियो क्लिप/कहानियाँ)

इकाई-2: लेखन अभ्यास (Writing Practice)

- अनुच्छेद लेखन (Paragraph Writing) - 100-150 शब्द
- पत्र लेखन - औपचारिक / अनौपचारिक
- सूचनाओं का लेखन (Notice Writing)
- बधाई/आमंत्रण/प्रार्थना-पत्र आदि का लेखन

इकाई-3: संस्कृत समाचार एवं संवाद (Contemporary Use of Sanskrit)

- संस्कृत में समाचार प्रस्तुति का प्रारंभिक अभ्यास
- आकाशवाणी/दूरदर्शन शैली में संवाद
- संस्कृत में भाषण देना: (1-2 मिनट का लघु भाषण)
- दैनिक समाचारों का संस्कृत अनुवाद (सरल)

मुख्य ग्रन्थ-

1. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत वार्तालाप (Sanskrit Vartalap) - प्रो. श्यामसुंदर मिश्र
3. संस्कृत भाषा सीखें (Learn Sanskrit Language) - स्वामी श्रीचरण
4. संस्कृत व्यवहारकौशल (Sanskrit Vyavaharakoushal) - डॉ. गिरीश पाण्डेय
5. संस्कृत संवाद प्रबोधिनी (Sanskrit Samvad Prabodhini) - डॉ. विनोद कुमार
6. संस्कृत व्यावहारिक शिक्षा (Sanskrit Practical Education) - प्रो. रवि शंकर शर्मा
7. संस्कृत संवाद साधना (Sanskrit Samvad Sadhana) - स्वामी त्रिपुरसुंदरी
8. व्यवहारिक संस्कृत (Practical Sanskrit) - डॉ. रामकृष्ण शर्मा
9. **संवादिनी"** - संस्कृत संवाद आधारित अभ्यास पुस्तक
10. **AIR संस्कृत समाचार (Audio Reference)**
11. चयनित श्लोक / सूक्तियाँ / संवाद उदाहरण (श्रीमद्भगवद्गीता, हितोपदेश, पंचतंत्र)

पाठ्यक्रम परिणाम:

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के उपरांत विद्यार्थी:

- औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रसंगों में संस्कृत में संवाद करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत में अनुच्छेद, पत्र, सूचना आदि लेखन कार्यों को शुद्ध एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- श्रवण एवं पठन सामग्री को समझकर उत्तर देने तथा उसका विश्लेषण करने में दक्ष होंगे।
- संस्कृत में लघु भाषण, संवाद प्रस्तुति तथा समाचार पठन जैसी व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लेने में आत्मविश्वास प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत भाषा के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण एवं रुचि का विकास करेंगे, जिससे वह शिक्षण, अनुवाद, या मंच प्रस्तुति जैसे क्षेत्रों में भी उपयोग कर सकें।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

इस प्रश्नपत्र में कुल 3 प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो 15 अंकों का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। शेष 2 प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को कुल तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक : 35 (TE)	**समय: 2 घंटे**
प्रश्न	**अंक**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	15 अंक
द्वितीय प्रश्न	10 अंक
तृतीय प्रश्न	10 अंक